तृतीय अध्याय

"जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व-कृतित्व"

3.1 व्यक्तित्व

हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में से एक जिन्हें 'वाणी के वरद पुत्र' कहा गया है, जिन्होंने अंतःकरण की भावुकता को लेकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को माँ सरस्वती की सेवा में अर्पित कर साहित्याराधना की है, वे युगांतकारी रचनाकार है 'श्री जयशंकर प्रसाद'।

"भरा हुआ मुँह, कान्ति युक्त गौरवर्ण, चश्मे और माथे की रेखाओं की गम्भिरता उनकी सरल हँसी के साथ घुल मिलकर दिव्य रूप धारण करती थी।"[1] प्रसाद के इस बाह्य वर्णन से उनके विराट व्यक्तित्व का हम अनुमान लगा सकते है। मनुष्य के विकास और प्रगति में उसके व्यक्तित्व का बहुत बड़ा हाथ होता है। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार के साथ-साथ बाह्य परिस्थितियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक जीवन को जानने से पूर्व उनके व्यक्तित्व एवं जीवन परिचय को जानना अत्यंत आवश्यक है।

जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व पर उनकी पारिवारिक स्थिति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने हिंदी साहित्य को अपनी एक से एक महान कृतियाँ अर्पित कर उसे समृद्धि और महानता की चोटि पर पहुँचाया है। हिंदी साहित्य सृष्टि में जिस तरह कबीर, सूर, तुलसी जैसे अद्वितीय संत साहित्यकारों की परंपरा रही है, उसी तरह आधुनिक हिन्दी साहित्य को भारतेन्दु, द्विवेदी, शुक्ल, प्रेमचंद और प्रसाद का अतुलनीय योगदान मिला है।

व्यक्ति मूलतः अपने अंतरंग के भाव को शब्दों द्वारा व्यक्त करने का प्रयत्न करता है। साहित्य पर

मनुष्य के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। 'जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर सूक्ष्मता से विचार करे तो हमे अवश्य ही प्रसाद के व्यक्तित्व के प्रति जिज्ञासा निर्माण होती है। यह जिज्ञासा इनकी रचनाओं के अध्ययन के साथ बढ़ती जाती है और प्रसाद के प्रति आदर, सम्मान और गौरव से हमारा मन भर आता है। अतः प्रसाद के गरिमामयी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना अत्यंत आवश्यक है।

शिवपूजन सहाय के शब्दों में, ''स्मित पूर्वाभिभाषी प्रसाद जी का व्यक्तित्व, विशिष्ट मानवोचित गुणों के कारण, बड़ा हृदयग्राही था। उनकी सरलवाणी की मधुरिमा, उनके मुक्त हास्य की विमलता, उनके स्वस्थ शरीर की गठन, उनके सुखदशील की आर्यता, उनके स्वर्जित पांडित्य की प्रौढ़ता, उनके सहिष्णु स्वभाव की कुलीनता उनकी सद्य-फला स्मृतिशक्ति की प्रखरता, उनके सामाजिक जीवन की उच्चता, उनके निष्कपट व्यवहार की शालीनता, उनकी निस्पृह साहित्य सेवा की महत्ता सबने मिलकर उनके व्यक्तित्व को विशद बनाया था। वैसा मोहक और उत्प्रेरक व्यक्तित्व आज हिन्दी जगत में सावधानता से टटोलना पड़ेगा।''[2]

प्रसाद के व्यक्तित्व का अविभाज्य अंग है; इसी सात्विक वृत्ति के कारण उनकी गिनती असाधारण कोटि में हो जाती है। प्रसाद मूलतः धार्मिक और उत्सव प्रिय स्वभाव के थे। संगीत से प्रेम उनके व्यावसायिक तथा साहित्यिक जीवन में रंग लाता है। जयशंकर प्रसाद के अद्‌वितीय व्यक्तित्व को महान कृतिकारा महादेवी वर्मा जी ने अद्‌भुत शब्दों में व्यक्त किया है - ''प्रसाद के रूप में हिन्दी ने शिव और वाणी दोनों का प्रसाद एक साथ ही पाया है। शिव के समान ही प्रसाद का ज्ञान, विष को अमृत बनाकर, भस्म को चांदनी का अंगराग बनाकर जटिल बुद्धि की दुरूहता को गंगा की तरंगाकुलता देकर, आनन्द की सृष्टि करता है। वह हृदय से अत्यंत कोमल, भावुक कवि थे और बुद्‌धि की प्रखरता में इतिहास के अंधकार में भी उन्होंने जीवन के ऐसे तत्त्व खोज दिए, जो अच्छा इतिहासकार भी न खोज पाता। जो इतिहासकार के लिए भी स्पर्धा का विषय होता है।''[3]

तात्पर्य हिंदी साहित्य को जयशंकर प्रसाद के रूप में शिव का प्रसाद ही मिला है।

3.1.1 जीवन-परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य को विकास काल में 'प्रसाद' रूपी अनमोल वरदान मिला है। प्रसाद के कविता, कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि साहित्य में उनकी प्रतिभा शैली के दर्शन होते है। प्रसाद के साहित्य में इतिहास, भारतीय दर्शनशास्त्र, पुरातत्त्व संबंधी विषय, बौद्‌ध-दर्शन आदि का सम्मेलन हुआ है, इसलिए इनका साहित्य 'मौलिक साहित्य' कहा जाता है। प्रसाद का साहित्य युगीन संवेदनाओं को जागृत रखता है। ऐसे युगद्रष्टा साहित्यकार ने अपने साहित्य में पात्रों के माध्यम से युगीन समस्याओं को उठाकर

उनको सुलझाने का सफल प्रयास किया है। प्रसाद नारी का चित्रांकन करने में सफल रहे हैं। इनके साहित्य में नारी के विविध रूपों को प्रस्तुत कर, उनकी संवेदना को वाणी देने का महान कार्य किया है। प्रसाद के नाटकों, काव्यों कहानियों, उपन्यासों में नारी के प्रेम, श्रद्धा, त्याग का चित्रण मिलता है। इनके साहित्य में आदर्श भारतीय नारी के दर्शन होते है। प्रसाद के उपन्यास में चित्रित 'नारी-जीवन' को नजदीकता से जानने के पूर्व हमें इस महान साहित्यकार के जीवनवृत्त का एवं उनके द्वारा निर्मित विशाल साहित्य सागर का संक्षेप में परिचय देखना आवश्यक हो जाता है।

3.1.2 जन्म-वंश परम्परा

छायावादी कवि चतुष्ट के प्रमुख कवि, श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म माघ शुक्ल दशमी विक्रम संवत् 1946 को माता-पिता के कई मनौतियों के बाद प्रसिद्ध शहर बनारस में हुआ। जयशंकर प्रसाद कान्यकुब्ज वैश्य परिवार से है। उनके पूर्वज कनौज के रहने वाले थे। बाद में उन्होंने जौनपुर में अपना कारोबार बिठाया। अंत में वे सब काशी आकर तम्बाकू का व्यवसाय करने लगे। वे उनके व्यवसाय की प्रसिद्धि के कारण 'सुंघनी साहु' के नाम से परिचित थे। प्रसाद के पितामह श्री शिवरत्न साहु अपना पुश्तैनी सुर्ती, तम्बाकु और सुंघनी का व्यापार सँभालते थे। उन्होंने दो विवाह किये। इनकी पहली पत्नी से शीतल प्रसाद का जन्म हुआ। शीतल प्रसाद आजन्म अविवाहित रहे। शिवरत्न जी को दूसरी पत्नी से पाँच सन्तानों की प्राप्ति हुई; उनमें से देवीप्रसाद श्रेष्ठ पुत्र थे। देवीप्रसाद का विवाह मुन्नीदेवी से हुआ। इनके पाँच सन्तानें हुई; उनमें से पुत्री देवकी ज्येष्ठ कन्या थी और जयशंकर प्रसाद सबसे कनिष्ठ पुत्र रत्न थे।

प्रसाद का पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से परिपूर्ण था। 'साहु' परिवार शैवदर्शन और भगवान शिवशंकर जी के पुरस्कर्ता थे। काशी नरेश के बाद पूरे काशी में 'सुँघनी साहु' परिवार प्रसिद्ध था। उनके यहाँ साहित्यिको, वैद्यों और ज्योतिषियों का आना-जाना लगा रहता था। विद्वानों की जमघट में प्रसाद के दादा और पिता वाद-विवाद में अपना लोहा मनवाते थे। इसी परंपरा को प्रसाद ने अपने व्यवसाय और साहित्य द्वारा आगे बढ़ाया।

3.1.3 बाल्यकाल

'सुंघनी साहु' परिवार अत्यंत संपन्नशील था। बड़ी कठोर तपस्या और मन्नतों के बाद जन्मे प्रसाद के शैशव के बारे में एक अविस्मरण किस्सा कहा जाता है - शैशव में 'अन्नप्रशान संस्कार' के बाद पूजा-विधि में पुस्तक, वही, मासिक पत्र, लेखनी तथा बच्चों को लुभाने वाले खिलौनों को रख दिया था और बाल प्रसाद ने इन

चीजों में से केवल लेखनी उठाकर सबको चकित कर दिया था। उन्होने मानो अपने भविष्य के प्रति संकेत ही कर दिया था।

प्रसाद अपनी माता के साथ विविध धार्मिक यात्राओं में शामिल हुए, जिनमें जौनपुर, विन्ध्याचल, साथ ही चित्रकुट, नैमिषारण्य, मथुरा, ओंकारेश्वर, धाराक्षेत्र, उज्जैन आदि स्थलों के धार्मिक वातावरण का उनके बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। प्रसाद के साहित्य में इस धार्मिक परिवेश को सहज देखा जा सकता है।

प्रसाद का बचपन साहित्यिक परिवेश में गुजरा। विद्वानों तथा साहित्यकारों ने उनके मन को साहित्य की ओर खींच लिया। धीरे-धीरे प्रसाद का बाल्यकाल विकसित हो रहा था। तभी 11 वर्ष की अवस्था में उनके पिता देवी प्रसाद का देहान्त हुआ और उनकी स्कूली शिक्षा समाप्त हो गई। उनके बड़े भाई शम्भूरत्न ने घर पर ही उनकी शिक्षा की व्यवस्था की। उन्हें व्यापार में भी ध्यान देना पड़ा; तद्नंतर कुछ ही वर्षों के पश्चात् माता मुन्नीदेवी का देहावसान हो गया और प्रसाद मातृछाया से वंचित हो गये। सत्रह बरस की आयु में उनके जेष्ठ बन्धु शम्भुरत्न भी स्वर्ग सिधारे। अपने परिवार पर आयी एक-से-एक आपत्तियों के कारण वे अकाली प्रौढ़त्त्व के शिकार हो गये। परिवार और व्यापार की जिम्मेदारी ढोते-ढोते प्रसाद अपने साहित्य जीवन में कविताओं की तुकबंदियों द्वारा त्रासदियों को भूलाने की कोशिश करते थे।

3.1.4 शिक्षा-दीक्षा

जयशंकर प्रसाद ने शैशवावस्था में गोवर्ध्दन सराय मुहल्ले की पाठशाला में पढ़ाई शुरू की। पाठशाला के गुरू श्री मोहिनीलाल गुप्त काव्य रचना करने के लिए प्रसाद को प्रेरित करते थे। उन्होने क्वींस कॉलेज बनारस से साँतवी कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। सन् 1901 में पिता की मृत्यु के कारण भाई ने घर पर ही प्रसाद की अंग्रेजी और संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था की। प्रसाद के संस्कृत के गुरू श्री दीनबन्धु ने संस्कृत और उपनिषदों में उनको रूचि निर्माण की। आठ-नौ बरस की आयु में ही 'अमर कोश' और 'लघुकौमुदी' प्रसाद को कंठस्थ थी। 9 वर्ष की उम्र में प्रसाद छंद की रचनाएँ किया करते थे। व्यापार की भागदौड़ सँभालते हुए उन्होने वैद्यकशास्त्र, ज्योतिष, वेद, उपनिषद, बाह्मण, आरण्यक, पुराणेतिहास दर्शन एवं धर्मशास्त्र आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। प्रसाद बौद्ध दर्शन के खासे अध्ययनकर्ता के रूप में जाने जाते है। प्रसाद संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी आदि भाषाओं से भलिभाँति परिचित थे। अतः उनकी विद्वत्ता का प्रभाव उनके साहित्य पर सहज ही देखा जा सकता है।

3.1.5 विवाह और सन्तति

प्रसाद का पूरा जीवन दुःखद घटनाओं की मालिका है। उन्हें केवल पारिवारिक ही नहीं बल्कि सांसारिक जीवन में भी अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। उनका पहला विवाह 20 वर्ष की आयु में श्रीमती विंध्यवासनी देवी से हुआ; परंतु वह प्रसाद को केवल 10 वर्ष का साथ देकर यक्ष्मा की वजह से चल बसी। तद्नंतर उन्होने सरस्वती से दूसरा विवाह किया, दुर्भाग्यवश वह केवल एक वर्ष का सहवास देकर प्रसुती में चल बसी। प्रसाद के व्यक्तिगत जीवन में आये एक के बाद एक आघातों के कारण उनके मन में जीवन के प्रति विरक्ति-सी निर्माण हो गयी। उनकी इस स्थिति को देखकर उनकी भाभी ने उनसे पुनः विवाह करने का निवेदन किया। भाभी के इस आग्रह को वे टाल ना सके। उन्होने तीसरा विवाह गोरखपुर के देवरिया गाँव की श्रीमती कमलादेवी से किया। उनसे 'शम्भुरत्न' नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। वैवाहिक जीवन की असफलताने प्रसाद में विरक्त भाव निर्माण हुआ।

3.1.6 साहित्यिक जीवन

जयशंकर प्रसाद का घराना 'सुँघनी साहु' बनारस का उदार घराना था। उनके यहाँ अनेक विद्वत्जनों का आना-जाना लगा रहता था। प्रसाद के प्रारंभिक सृजनकाल में मुन्शी कालिन्दी प्रसाद और दूसरे रीवा निवासी श्री रामानन्द से उनकी घनिष्ठता थी। प्रसाद की श्री प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, 'निराला', महादेवी वर्मा, रामचंद वर्मा, केशव प्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा, शांतिप्रय द्विवेदी आदि विद्वान तथा प्रतिष्ठित साहित्यकारों से मित्रता थी। उनकी नागरी प्रचारिणी सभा के डॉ. श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लाला भगवानदीन, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔंध', केदारनाथ पाठक आदि से अनेक बार भेंट-वार्तालाप होती रहती थी। प्रसाद को काशी के अनेक विद्वानों के सहवास का लाभ मिला। उनमें रूप नारायण पाण्डेय, श्री शिवपुजन सहाय, श्री गोविन्द वल्लभपंत, पं. विश्वंभरनाथ जिज्जा, उग्र, पं. नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ. राजेन्द्र नारायण शर्मा, वाचस्पति पाठक, 'बेढब' बनारसी, बेनीपुरी, पं. लक्ष्मी नारायण मिश्र, सुमन, द्विज तथा पद्मनारायण आचार्य आदि विद्वानों को साहित्यिक गोष्ठियों में वे अपनी रचनाएँ सुनाते थे। हिंदी के समवर्ती कवियों तथा साहित्यकारों से उनकी अच्छी जान-पहचान थी। प्रसाद सदा ही साहित्यकारों के तारापुँज में ध्रुवतारे के समान चमकते थे।

3.1.7 प्रारंभ और उत्कर्ष

महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद साहित्य क्षेत्र में अपनी नवीनता को लेकर अवतरित हुए। अन्य

महान रचनाकारों की तरह उन्हें भी आलोचना का भाजन बनना पड़ा था; तभी वह तपते सोने में परिवर्तित हो सके। उनके नाटकों को कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा था। उसकी रंगमंचियता की असफलता पर अनेक सवाल उठे; मगर 'चन्द्रगुप्त' नाटक के मंचन से सभी सवाल अपने आपही सुलझ गए। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने भी प्रथमतः प्रसाद साहित्य की आलोचना की थी; मगर बाद में वे जीवश्च-कंठश्च स्नेही बने रहे।

साहित्य सृजन के आरंभ काल में उन्हें अनेक कटु आलोचनाएँ झेलनी पड़ी है। उन्हें जेष्ठ समीक्षक एवं लेखक महावीर प्रसाद की प्रमुखतः से टीका-टीप्पणी सहनी पड़ी; साथ ही शुक्ल, व्यास आदि आलोचकों ने तो उनकी प्रतिभा पर ही अनेक सवाल उपस्थित किए। प्रसाद ने इन बाधाओं को पार करते हुए ''धर्म से लेकर समाज तक, इतिहास से संस्कृति तक, पूर्व से पश्चिम तक, कुटिया से राजप्रसाद तक, स्थूल से सुक्ष्म तक, बाह्य से अन्तर्जगत तक उन्होंने सफल एवं सुदिर्घ यात्राएँ की और हर पड़ाव पर एक नयी अनूभुति को जन्म देते हुए साहित्य का गौरव बढ़ाया।''[4]

प्रसाद विकासोन्मुखी विचारधारा के अग्रदूत कहे जाते है। उनके बहुगुणी व्यक्तित्व की तरह; उनका साहित्य भी व्यापक और गंभीर बन पड़ा है। संवत् 1963 में सर्वप्रथम 'भारतेन्दु' में इनकी कविता प्रकाशित हुई। बाद में 'इन्दु' पत्रिका में इनकी रचनाएँ प्रसिद्ध होती थी। प्रसाद को छायावाद के अग्रणी कवि कहा जाता है। केवल काव्य ही नहीं बल्कि उनके नाटक, निबंध, कहानियाँ, उपन्यास, आलोचनात्मक साहित्य आदि का विराट रूप हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। प्रसाद साहित्य पर वेद, दर्शनशास्त्र, उपनिषद, इतिहास आदि का खासा प्रभाव दिखाई देता है।

3.1.8 अन्तिम समय

हिंदी साहित्य को अपनी एक से एक कृति अर्पित करनेवाले महान साहित्यकार प्रसाद अंतिम समय में राजयक्ष्मा से पीड़ित थे। उन्होंने परिवार तथा व्यापार की जिम्मेदारीयों को उठाते हुए, अपना अल्प कालिक जीवन साहित्य देवी के चरणों पर अर्पित कर दिया था। प्रसाद बनारस में विक्रम संवत् 1994 की कार्तिक शुक्ल एकादशी को अपना देह त्यागकर वैकुंठ सिधार गए। प्रसाद की अल्पकालिक मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए श्री वाचस्पति पाठक लिखते है - ''उनकी प्रतिभा ने अपने साहित्य की अभी भूमिका ही बाँधी थी कि वह हम सब के और हिंदी के दुर्भाग्य से हमारे बीच से चले गए और 'इरावती' की तरह उनका काम अधुरा रह गया।''[5]

प्रसाद परिस्थितियों तथा परिवार के वात्याचक्र में डटे रहकर तथा धीरज न खोकर उसे साहस के साथ झेलकर असाधारण कोटि के रचनाकार एवं दार्शनिक विचारक बन सके। अपने स्वभाव माधुर्य तथा रोचक

जीवन शैली के कारण सदा लोकप्रियता की सीढ़ी चढ़ने वाले प्रसाद अपने विशाल साहित्यिक रचनाओं को लोक सेवा में अर्पित कर जन-जन को महानता का संदेश पहुँचाने में सफल सिद्‌ध हुए है।

3.2 कृतित्व

महान साहित्यकार प्रसाद का औपन्यासिक साहित्य संख्यात्मक दृष्टि से अल्प होते हुए भी अपने विषय वैविध्य, गंभिरता और व्यापकता की दृष्टि से अनुपम एवं श्रेष्ठ है। प्रसाद ने अपने साहित्य के माध्यम से अतीत का गौरवगान किया है तथा युगीन समस्याओं को अपने साहित्य में प्रतिबिंबित किया है। उन्होने अपनी रोमानी वृत्तिपर मात करते हुए सामाजिक समस्याओं का वास्तव चित्र खींचकर उसकी कटु आलोचना की है तथा सामाजिक जागृति का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रसाद के साहित्यपर तत्कालीन परिवेश का गहरा प्रभाव अंकित होता है। प्रसाद का तत्कालीन परिवेश देश की पराधीनता का रहा है। अतः उनके साहित्य का लक्ष्य देश की स्वाधीनता हेतु लोगों को जागृत करना था। लोगों को राष्ट्रीयता की धारा में सम्मिलित करने केलिए उन्होंने प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और गौरव के प्रति लोगों में जागृति निर्माण की।

प्रसाद ने उम्र की 9 वर्ष से छंदों की रचना शुरू की थी। इनकी 12 वर्ष के उम्र में लिखी कविता इस प्रकार है -

''हारे सुरेश, रमेस, घनेस गनेरहू शेष न पावत पारे
पारे हैं कोटिक पात की पुँज 'कलाघर' ताहि छिनो लिखि तारे
तरिन की गिनती सम नाहिं सुजेते तरे प्रभु पापी बिचारे
चारे चले न बिरंचिहू के जो दयालु है शंकर ने कु निहारे।''[6]

प्रसाद ने काव्य के साथ-साथ नाटक, उपन्यास, निबंध, कहानी तथा जीवनी आदि के साहित्य की विविध विधाओं में अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्य रचनाएँ लिखी। प्रसाद जीवन के अंत तक साहित्य रचना करते रहे। प्रसाद की इन्हीं रचनाओं का संक्षेप में परिचय निम्नलिखित है -

3.2.1 कवि

हिंदी कविता के नवयुग के शिल्पकारों में प्रमुख रूप से कवि श्री जयशंकर प्रसाद, श्री सुमित्रानंदन पंत और श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी को प्रमुख स्थान दिया जाता है। उन्हें 'बृहतत्रयी' की उपमा दी जाती है। इन्होने अपनी

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

काव्यरचना द्वारा युगान्तकारी काव्य की रचना कर हिंदी साहित्य को मौलिक उपलब्धियाँ प्रदान की है।

महादेवी वर्मा कवि जयशंकर प्रसाद के विषय में लिखती है - ''कवि मानव वह स्वभाव से थे। उसके लिए उन्हें प्रयत्न नहीं करना पड़ा था, जैसे दीपक जल जाता है तो आलोक मंडल के लिए उसे प्रयत्न नहीं करना पड़ता। उसके जलने के साथ ही आलोक दूर तक फैल जाता है। फूल खिलता है, उसे अपने सौरभ को फैलाने का प्रयास नहीं करना पड़ता, उसका खिलना ही सौरभ का फैल जाना है।''[7]

जयशंकर प्रसाद के काव्य साहित्य पर बंगला साहित्य का प्रभाव देखा जा सकता है, साथ ही सूफीवाद, फारसी श्रृंगार काव्य और अंग्रेजी का भी प्रभाव रहा है। प्रसाद ने अपने काव्य में भावना और कल्पना का मणिकांचन संयोग किया है। वे हिन्दी काव्य के छायावादी परंपरा के अग्रणी व्यक्तित्व थे। प्रसाद के काव्य साहित्य को तीन विभाग में विभाजित किया गया है -

3.2.1.1 प्रारंभिक रचनाएँ

प्रसाद प्रारंभिक रचना साहित्य पर परंपरा और वैयक्तिकता का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इनकी प्रारंभिक रचना 'इंदु' साहित्यिक पत्रिका में 'अम्बिका प्रसाद गुप्त' के संपादन में संवत् 1966 को प्रकाशित हुई। प्रसाद के प्रारंभिक काव्य संग्रह निम्न लिखित है -

1] करूणालय - सन् 1912
2] कानन कुसुम - सन् 1912
3] प्रेमपथिक - सन् 1913
4] महाराणा का महत्त्व - सन् 1914
5] चित्राधार - सन् 1918
6] झरना - सन् 1918

प्रसाद की प्रारंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा में रचित है। 'चित्राधार' काव्य संग्रह की कुछ रचनाएँ ब्रजभाषा में रचित है। बाद की सभी काव्य रचनाएँ खड़ी बोली में रची गई है। प्रसाद इन संग्रह में रचित कविताओं के माध्यम से आदर्श की स्थापना करने में सफल सिद्ध हुए है। प्रसाद ने खड़ीबोली का उपयोग कर छायावादी युग को जन्म दिया है। उन्होंने काव्य के माध्यम से मानववादी प्रेमवाद तथा शांति का संदेश फैलाया है। हिंदी साहित्य में प्रसाद के प्रारंभिक काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3.2.1.2 प्रौढ़ गीत काव्य

आरंभिक काव्य रचनाओं के सफल अंकन के साथ-साथ प्रसाद की काव्य प्रतिभा उत्तरोत्तर प्रौढ़ता की ओर बढ़ रही थी। 'आँसू' और 'लहर' काव्य रचनाओं ने प्रसाद को हिन्दी काव्य धारा में सफलता की चोटि तक पहुँचाया है।

1] आँसू - (सन् 1926)

'आँसू' काव्य संग्रह का प्रथम संस्करण साहित्य-सदन चिरगाव से संवत् 1982 में हुआ। इस काव्य-संग्रह में कुल 126 छंद संग्रहीत है। इस काव्य संग्रह में कवि ने व्यक्तिगत वेदना को व्यापक धरातल में लाने का सफल प्रयास किया है। प्रसाद ने वेदना को उदात्त रूप दिया है। प्रसाद इसमें प्रौढ़ बौद्धिक और दार्शनिक चिंतक के रूप में नजर आते हैं। इसे 'कामायनी' की पूर्वपीठिका कहा जाता है।

2] लहर - (सन् 1935)

'लहर' काव्य संग्रह फूटकर गीतों का संग्रह है। इसमें प्रेमभाव के साथ-ही करूणा का विराट और व्यापक रूप देखने को मिलता है। इन फूटकर गीतों मे ऐतिहासिक कविताएँ सम्मिलित है। प्रसाद ने इतिहास को आधार बनाकर नारी मनोवैज्ञानिक को दर्शाने में अद्‌वितीय सफलता हासिल की है।

'आँसू' काव्य संग्रह ने 'प्रसाद' को महानता के शिखर पर पहूँचा दिया। उनके 'लहर' काव्य संग्रह को हिन्दी के गीत काव्य में श्रेष्ठ स्थान मिला है।

3.2.1.3 प्रसाद का सर्वोत्कृष्ठ महाकाव्य 'कामायनी'

प्रसाद 'कामायनी' महाकाव्य सन् 1936 में प्रकाशित रचना है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में 'कामायनी' यह सशक्त रचना है। छायावादी काव्य-धारा का 'कामायनी' प्रबंध काव्य है। 'कामायनी' में सर्वांगपूर्ण जीवन दर्शन का व्यापक चित्रण किया है। इसमें आदिमानव के आख्यान के प्राचीन कथानक को नए स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके कथानक में मनोवैज्ञानिकता तथा मानवी सभ्यता को प्रदर्शित किया गया है। 'कामायनी' के वस्तुसंघटन में पश्चिम की वैज्ञानिकता तथा भारतीय दर्शन का अनुपम संयोग हुआ है। 'कामायनी' में शैववाद विशद रूप से वर्णित हुआ है। भावना एवम् दर्शन तथा वैज्ञानिक विकास का संतुलित समन्वय 'कामायनी' ने भारतीय संस्कृति को भेंट रूप में दी है। यह महाकाव्य मानवतावाद एवं अहिंसा का संदेश प्रसारित करनेवाला

प्रधान दूत है।

तात्पर्य, 'जयशंकर प्रसाद' ने काव्य में छायावादी वृत्ति, रहस्यात्मकता, प्राकृतिक सौंदर्य, मानवीय भावों का सुंदर संयोजन, काव्य शैली की नव्यता आदि विशेषताओं से भरपूर काव्यरचना की सृष्टि की है।

''अतः इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि 'प्रसाद' एक मानवतावादी युगान्तकारी छायावादी महाकवि है।

सदियों तक साहित्य नहीं यह समझ सकेगा।

तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य थे।''[8]

3.2.2 गद्यकार

जयशंकर प्रसाद का काव्यक्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब हम उनके गद्य साहित्य की ओर दृष्टि डालते है तब हमें यह महसूस होता है कि छाया के आभास में विचरण करनेवाले कवि ने गद्य में भी उतनी ही सहजता से तथा प्रभावात्मक ढंग से नाटक, उपन्यास, कहानियाँ लिखी है। अतः ऐसे बहुप्रतिभा संपन्न साहित्यकार के गद्य रूप से परिचित होना आवश्यक है।

3.2.2.1 नाटक

हिन्दी गद्य साहित्य की नाटक विधा में जयशंकर प्रसाद ने एक-से-एक नायाब हिरों को तराशा है; जिसकी चकाचौंध से नाटक सृष्टि आजतक विस्मित है।

नवजागरण कांल में नाट्य क्षेत्र में जब भारतेन्दु हरिश्चन्द्र नामक रवितुल्य रचनाकार का अस्त हुआ; तभी सारे नभोमंडल में छाये अंधःकार को प्रसाद रूपी दिव्य तेजस्वी आत्मा ने नाट्य साहित्य को उभारा। इसी कारण कहा जाता है कि, प्रसाद के रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का पुनर्जन्म हुआ है। प्रसाद के निम्नलिखित नाटक प्रकाशित हुए है -

1] सज्जन - सन् 1910 (एकांकी)

2] कल्याणी परिणय - सन् 1912 (एकांकी)

3] करूणालय - सन् 1912 (एकांकी)

4] प्रायश्चित - सन् 1914 (एकांकी)

5] राज्यश्री - सन् 1918

6] विशाख - सन् 1921

7] अजातशत्रु - सन् 1922

8] जनमेजय का नागयज्ञ - सन् 1923

9] कामना - सन् 1926

10] स्कंदगुप्त - सन् 1928

11] चन्द्रगुप्त - सन् 1928

12] एक घूँट - सन् 1929

13] ध्रुवस्वामिनी - सन् 1933

''प्रसाद पहले नाटककार है, जिन्होने इस उपेक्षित विधा को अपनी समर्थ नाट्य-कृतियों की प्रभाव-क्षमता से साहित्यिक जगत् में एक सम्माननीय स्थान दिया।''[9] इनके नाटकों ने ऐतिहासिकता, प्राचीन संस्कृति का गान, भारतीय एवं पाश्चात्य शिल्प का समन्वय, काव्यात्मकता आदि विशेषताओं को संजोकर 'भारतीय संस्कृति' का गौरव गान किया है।

प्रसाद के शुरूआती नाटकों पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव नजर आता है; परंतु बाद में उनके नाटक कर्तव्य-निष्ठ, प्रवृत्ति-परायण, संघर्षरत और कर्ममार्गी चरित्रों का गान करते है।

प्रसाद के नाटक हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। अतः हिंदी नाट्य-जगत् में जयशंकर प्रसाद का स्थान अग्रणी है।

3.2.2.2 कहानी

20 वी शताब्दी के दूसरे दशक के आरंभ में प्रकाशित कहानियों में 'जयशंकर प्रसाद' की कहानियाँ सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। प्रसाद के कहानी संग्रह निम्नलिखित है -

1] छाया - सन् 1912

2] प्रतिध्वनि - सन् 1926

3] आकाश दीप - सन् 1929

4] आँधी - सन् 1932

5] इन्द्रजाल - सन् 1936

जयशंकर प्रसाद की कहानी-रचना का प्रथम अध्याय है 'छाया' कहानी संग्रह जिसमें ग्यारह कहानियाँ संग्रहित है। यह सभी कहानियाँ इतिवृत्त प्रधान है। 'प्रतिध्वनि' कहानी संग्रह में प्रसाद ने नए प्रयोग किए है;

जिसमें सभी कहानियाँ इतिवृत्तिन्यून का ग्रहण करती है। 'आकाश दीप', 'आँधी', 'इन्द्रजाल' में सम्मिलित कुछ कहानियाँ अत्यंत छोटी है उदा. 'भिखारिन', 'वैरागी' आदि; तो कुछ बड़ी छः सात पृष्ठों की उदा. 'ममता' 'सुनहला साँप' आदि। इससे भी बड़ी पन्द्रह पृष्ठोवाली कहानियाँ है - 'आकाश दीप', 'स्वर्ग खंडहर में' आदि। सबसे बड़ी कहानियाँ है - 'आँधी' (51 पृष्ठ), 'दासी' (33 पृष्ठ), 'सालवती' (37 पृष्ठ) आदि।

इस तरह ''प्रसाद की कहानियों की एक अन्य महती विशेषता है, चिन्तन की एकरूपता। वे आदि से अंत तक पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के पूर्ण भारतीय दर्शन-पथ पर ही अग्रसर दृष्टिगोचर होते हैं।''[10]

अतः हिन्दी कहानी साहित्य में जयशंकर प्रसाद की कहानियों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3.2.2.3 निबंध

प्रसाद के निबंध हिन्दी साहित्य में अपना अलग महत्त्व रखते है। प्रसाद ने केवल साहित्यिक निबंधों की रचना नहीं की; बल्कि ऐतिहासिक और समीक्षात्मक निबंधों की महत्त्वपूर्ण रचना की है। इनके निबंधों को तीन विभागों में विभाजित किया जाता है -

1] साहित्यिक निबंध -

यह निबंध 'इन्दु' पत्रिका में संवत् 1966-69 में प्रकाशित हुए थे।

1] प्रकृति-सौंदर्य

2] भक्ति

3] हिंदी - साहित्य सम्मेलन

4] सरोज

5] हिंदी कविता का विकास

2] ऐतिहासिक निबंध -

ऐतिहासिक नाटकों एवं कहानियों के रचना के बाद प्रसाद ने ऐतिहासिक निबंधों को लिखकर भारतीय साहित्य को ऐतिहासिक धरोहर प्रदान की है। उनके ऐतिहासिक निबंध है -

1] सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य

2] मौर्यों का राज्य परिवर्तन

3] आर्यावर्त का प्रथम सम्राट

4] दसराज युद्ध आदि।

3] समीक्षात्मक निबंध -

ऐतिहासिक निबंध लेखन के साथ-साथ प्रसाद ने अनेक समीक्षात्मक निबंधों की सृष्टि की है। उनके समीक्षात्मक निबंध है -

1] चम्पू

2] कवि और कविता

3] कविता - रसवाद

4] काव्य और कला तथा निबंध -

इस निबंध संग्रह में संकलित निबंध है -

1] काव्य और कला

2] रहस्यवाद

3] रस

4] नाटकों में रस का प्रयोग

5] नाटकों का आरंभ

6] रंगमंच

7] आरंभिक पाठ्य काव्य

8] यथार्थवाद और छायावाद आदि।

डॉ. रामप्रसाद मिश्र प्रसाद के निबंधों के बारे में लिखते हैं - ''प्रसाद के निबंधों का उद्देश्य युगीन तथा स्वकीय सृजन के तल का दर्शन कराना मात्र है, निबंधकार अथवा आलोचक का विशिष्ट गौरव प्राप्त करना नहीं। प्रसाद एक प्रौढ़ निबंधकार है, इतना कह देना पर्याप्त है।''[11] अतः प्रसाद के कृतित्व में उनके निबंधों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3.2.2.4 उपन्यास

हिंदी साहित्य के उपन्यास क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का महत्त्वपूर्ण योगदान है। जिस तरह उन्होंने काव्य और नाट्य क्षेत्र में अपनी विशेषता स्थापित की, उसी तरह उन्होने उपन्यासों की रचना में अपना नवीन स्वरूप

प्रदान किया है। हिंदी उपन्यासकारों में प्रेमचंद का स्थान सर्वोपरी है। प्रेमचंद कथा परंपरा में आने वाले प्रसाद एक ऐसे उपन्यासकार थे, जिन्होने अपने साहित्य में युग-जीवन का सर्जीव चित्र खिंचा है। प्रसाद ने प्रेमचंद की तरह आदर्शवाद की भावनाओं से ओतप्रोत साहित्य की रचना की है। प्रसाद मानव के बाह्य की अपेक्षा उसके अंतरिम तल की खोज में लगे रहते थे। वह नैतिक-आदर्शों में रचे बसे उपन्यासों की निर्मिती करने की बजाय समाज में विद्यमान अनैतिक, बीभत्सता, पाखंड और पापाचार का पर्दाफाश करना अपना कर्तव्य समझते थे।

हिंदी साहित्य में प्रसाद को सफल कवि-नाटककार कहा जाता है; मगर उनके उपन्यासों को टीका का भाजन बनना पड़ा। ''हिंदी उपन्यास की उद्भवकालीन पृष्ठभूमि में प्रसाद के उपन्यासों को बिना विवेचित-विश्लेषित किये उन्हें 'सामाजिक विकृतियों का उपन्यासकार तक कह दिया गया, जो अनुचित ही नहीं, अन्यायपूर्ण भी है। दरअसल जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों का समुचित विश्लेषण-मूल्यांकन ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अभी किया जाना बाकी है।''[12]

प्रसाद ने उपन्यास जगत में कुल ढ़ाई उपन्यासों की रचना कर नई क्रांति ला दी। प्रसाद परम 'मानवतावादी' थे। वह उपन्यासों की माध्यम से केवल एक कथा नहीं कहना चाहते बल्कि मानव जीवन के व्यापक पक्ष को दर्शाना अपना उद्देश्य समझते थे। इसके लिए सामाजिक पक्ष के अतिरिक्त वैयक्तिक और मानसिक पक्षपर भी ध्यान देते थे।

प्रसाद ने उपन्यास की अभिव्यक्ति में वास्तविकता का चित्रण करके यथार्थवादी प्रवृत्ति को स्पष्ट किया। उन्होने उपन्यास में सामाजिक कुरीतियों को यथार्थ रूप से प्रकट किया है। उनके उपन्यास सामयिक असंतोष के विरुद्ध विद्रोह को जगाते है। समाज में फैली गंदगी का वास्तव स्वरूप समाज के सामने लाने में सफल हो गए। प्रेमचंद की तरह नैतिक-आदर्श की स्थापना न करके समाज में छिपे नैतिक ढोंग को यथार्थपूर्वक उपन्यास में चित्रित किया है।

प्रसाद कुल ढाई उपन्यासों को लेकर उपन्यास जगत् पर छाये रहे। वे उपन्यास निम्नलिखित हैं -

1] कंकाल - सन् 1929

2] तितली - सन् 1934

3] इरावती - सन् 1935

इन उपन्यासों का अल्प परिचय इस प्रकार है -

1] कंकाल (सन् 1929) -

'कंकाल' जयशंकर प्रसाद का सन् 1929 में प्रकाशित प्रथम उपन्यास है। 'कंकाल' यह एक विचारप्रधान उपन्यास है। इसमें प्रसाद ने उच्चजातीयता तथा अभिजात्य वर्ग की आदर्शवादी मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न लगाया है। 'कंकाल' यथार्थवादी परंपरा की प्रथम कृति है। इस उपन्यास में भारतीय समाज के सभी कमजोर पहलुओं को स्पष्टता से रखा गया है। प्रसाद ने इसमें धर्मस्थानों पर होनेवाले अनाचार का यथा-तथ्य चित्रण किया है। 'कंकाल' एक व्यंग्यपूर्ण कृति है। प्रसाद ने धर्म, समाज व्यवस्था के खोखलेपन को उघाड़ कर रख दिया है। यह उपन्यास समाज के आधारस्तंभ धर्म तथा उसका अनुसरण करनेवाला व्यक्ति इन दोनों के अधःपतन की कहनी कहता है। 'कंकाल' उपन्यास व्यक्तिस्वतंत्रता की माँग करता है। प्रसाद समाज के जाति-वर्ण-रक्त की मर्यादाओं, रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करते है। 'कंकाल' उपन्यास समाज के अवैध संतानों की कथा कहता है। उपन्यास की कथा स्त्री-पुरुष-समस्या पर केंद्रित है। इसमें भारतीय नारी की दुर्दशा और कुण्ठा को दर्शाया गया है। 'कंकाल' रूढ़ एवं जर्जर परंपरागत समाज के विद्रोह का उद्घोष करता है, साथ ही इसमें मानवी जीवन के ऱ्हासोन्मुख प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। 'कंकाल' तत्कालीन भारतीय समाज का 'कंकाल' है, जो सामाजिक खोखलेपन को बड़ी यथार्थता से सबके सामने प्रस्तुत करता है। प्रसाद ने 'कंकाल' द्वारा समाज का नग्न चित्रण किया है। वे आदर्श समाज रचना की आवश्यकता की ओर सबका ध्यान खिंचना चाहते हैं। उन्होंने व्यक्तिवादी मानवतावाद की माँग करके 'व्यक्ति स्वतंत्रता' को बढ़ावा दिया है। 'कंकाल' प्रसाद का बहुचर्चित एवं सफल उपन्यास है।

2] तितली (सन् 1934) -

प्रसाद का 'तितली' यह सन् 1934 में प्रकाशित द्वितीय उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रसाद ने ग्रामिण जीवन का विशाल चित्र प्रस्तुत किया है। प्रसाद ने इसमें किसानों और मजदुरों के वास्तव स्थिति को चित्रित किया है। प्रसाद इसके द्वारा ग्राम जीवन में जनजागृति के साथ ही ग्रामीण नवनिर्माण की आवश्यकता पर बल देते हैं। 'तितली' में 'ग्रामीण समस्या' को प्रभावी रूप से चित्रित हुई है। 'कंकाल' उपन्यास के बाद 'तितली' यह यथार्थवादी परंपरा का निर्वाह करनेवाला द्वितीय उपन्यास है; जिसमें भारत के समाज जीवन का वास्तविक चित्रण किया गया है। 'तितली' में ग्राम्य समस्या के साथ-साथ नागरी जीवन तथा पारिवारिक समस्याओं की पृष्ठभूमि को सफलता पूर्वक चित्रित किया गया है। 'तितली' में प्रसाद 'व्यक्तिवादी चेतना' को उद्घोषित करते है। 'तितली' में प्रसाद ने अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया है। इसमें वैयक्तिक स्वतंत्रता की माँग की है। यह

उपन्यास सामन्वतादी रूढ़ियों के प्रति आवाज उठाता है। इसमें प्रसाद ने किसानों और मजदूरों के जीवन-संघर्ष को स्वर दिया है। प्रसाद ने 'तितली' में नारी के स्वाभिमानी रूप को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। प्रसाद व्यक्ति के उत्थान को महत्त्व देते है और 'तितली' में वे उसके हक के प्रति जागृत रहते है। 'तितली' उपन्यास में गांधीवादी आदर्श को प्रस्थापित किया गया है। प्रसाद ने गाँवों के सभी पहलुओं को यथार्थ रूप से चित्रित किया है और सुधारवादी दृष्टिकोण का स्विकार किया हैं। प्रसाद ने 'तितली' में ग्रामोत्थान के साथ-साथ समाज एवं देश के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। साथ ही प्रसाद ने इस उपन्यास में नारी-जागरण एवं ग्रामोत्थान आन्दोलन द्वारा समाजव्यापी अंधकार को दूर करते हुए आशा-किरणों के दर्शन कराए हैं।

3] इरावती (सन् 1935) -

प्रसाद का 'इरावती' यह सन् 1935 में प्रकाशित तीसरा एवं अंतिम उपन्यास है; जो अपरिसमाप्त रहा है। इस उपन्यास की रचनाभूमि ऐतिहासिक है। यह उपन्यास स्वच्छन्दतावादी अतीत को पूर्वजागृत करता है। 'इरावती' यह ऐतिहासिक उपन्यास प्रसाद की नाटक परंपरा से प्रेरित है। इसमें प्रसाद ने शुंगकालीन परिवेश तथा सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति को सफलता पूर्वक चित्रित किया है। प्रसाद ने इस उपन्यास में कल्पना-शक्ति द्वारा इतिहास एवं संस्कृति का मणिकांचन संयोग कराया है। प्रसाद की प्राचीनतावादी प्रवृत्ति 'इरावती' में झलक पड़ी है, इसी कारण यह उपन्यास उनके स्वभाव के अत्यंत निकट है। 'इरावती' में प्रसाद ने रोमांस और पुनरूत्थानवादी प्रवृत्ति के दर्शन कराए हैं। इस उपन्यास में प्रसाद ने शैवगान किया है। 'इरावती' में प्रसाद आनन्दवाद का प्रचार करते है। उन्होने इसमें जीवन-दर्शन को स्पष्ट किया है। इस ऐतिहासिक रचना के केवल 107 पृष्ठ ही रचे गए थे, तभी यह महान साहित्यकार हमें छोड़कर चले गए। 'इरावती' उपन्यास अधूरा होते हुए भी श्रेष्ठ सांस्कृतिक कृति का परिचायक है। यह निवृत्तिवाद का प्रत्याख्यान है। अगर यह कृति पूरी हो गई होती तो यह ऐतिहासिक उपन्यासों में अपने आपमें एक महान उपलब्धि साबित होती।

जयशंकर प्रसाद केवल ढाई उपन्यासों की रचना कर उपन्यास जगत् में अपनी एक खास पहचान बनाने में सफल हुए हैं।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद को 'महान साहित्यकार' की चोटि तक पहुँचाने में उनके अद्‌वितीय एवं सर्वगुणसंपन्न व्यक्तित्व का गहरा संबंध है। इनके इस बहुआयामी व्यक्तित्व के विकास में उनके पारिवारिक और साहित्यिक

परिवेश का हाथ है। संपन्न परिवार में उत्पन्न इस महानायक ने परिवार पर आई एक से एक आपदाओं से लढ़ते हुए व्यापार एवं साहित्य का सफलता से निर्वाह किया। जिस तरह उनके जीवन से माता-पिता तथा अग्रज चल बसे उसी तरह दो जीवन संगिनीयाँ भी उनका अधूरा साथ देकर चल बसी। इन्हीं कारणों से प्रसाद के जीवन में विरक्ति सी छा गई। वे इन सारी आपदाओं को झेलकर आगे चलकर सफल साहित्यकार बने। प्रसाद के अत्यंत विद्वान और ऋषिपूर्ण व्यक्तित्व ने अनेक भाषाओं तथा वेद संपन्नता को अपने साहित्य में मुक्त संचार करवाया। अनेक साहित्यिक विद्वान तथा मित्र-परिवार आज भी उनके व्यक्तित्व तथा साहित्य के दिवाने हैं।

हिंदी साहित्य जगत में प्रसाद साहित्य एक मौल्यवान विरासत समझी गई है। उन्होने हिंदी साहित्य में विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, चम्पूकाव्य, निबंध उनके बहुगुणी प्रतिभा के परिचायक हैं। उन्हें साहित्य के हर क्षेत्र में सफलता मिली है। उनकी रचनाएँ क्रमशः प्रौढ़ता को प्राप्त हो गयी है, जो उनके व्यक्तित्व विकास को दर्शाती है। प्रसाद साहित्य का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति के उच्चादर्श तथा मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना करना है। उनके साहित्य ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में नये आयामों की स्थापना की है। प्रसाद साहित्य में सत्य के प्रति आस्था, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति, अन्याय का विरोध सहज देखने को मिलता है। हिंदी साहित्य में प्रसाद और प्रसाद साहित्य का मुख्य लक्ष्य है, जनता की सेवा करना। अतः हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रसाद साहित्य अमर हुआ है।

प्रसाद का कवि रूप जितना आकर्षक एवं श्रेष्ठ है; उतना ही समर्थ रूप है गद्यकार का। उन्होने नाटक, निबंध, कहानी तथा उपन्यास आदि विधाओं में अत्यंत सहजता से तथा प्रभावात्मकता से अपनी लेखनी चलाई है। प्रसाद नाटककार रूप में विख्यात है। उनके नाटकों में भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती है। प्रसाद का निबंध क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनके साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं समीक्षात्मक निबंधों ने अपनी एक पहचान बनाई है। उसी तरह कहानी क्षेत्र में प्रसाद ने बहुमूल्य योगदान दिया है। उनकी कहानियाँ विशेष रूप से दार्शनिक एवं इतिवृत्तात्मक हैं। जयशंकर प्रसाद के समग्र साहित्य में उनके ढाई उपन्यास अपना अलग स्थान रखते है। हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रसाद लिखित 'कंकाल' (सन् 1929), 'तितली' (सन् 1934) और 'इरावती' (सन् 1935) उपन्यास अपनी मौलिकता एवं श्रेष्ठता के कारण हिंदी उपन्यास जगत् में मील का पत्थर साबित हुए है। उनके उपन्यास सामाजिक, यथार्थवादी एवं आदर्शपरक और इतिहास प्रधान है। अतः हम कह सकते है कि जयशंकर प्रसाद एक महान गद्य लेखक थे। हिंदी साहित्य के इतिहास में 'जयशंकर प्रसाद एवं उनके साहित्य' को प्रमुखता से याद किया जाएगा।

संदर्भ सूची

1. सं. महावीर अधिकारी - प्रसाद का जीवन-दर्शन, कला और कृतित्व, पृ. 21
2. कृष्णदेव प्रसाद गौड 'बेढ़ब' - प्रसाद का साहित्य, पृ. 23
3. रामविलास शर्मा - युग प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद, पृ. 25
4. आ. उमेश शास्त्री - हिंदी साहित्य का निबंधात्मक इतिहास, पृ. 542
5. सं. महावीर अधिकारी - प्रसाद का जीवन-दर्शन, कला और कृतित्व, पृ. 17
6. सं. शम्भुरत्न प्रसाद - प्रसाद ग्रंथावली - 1, पृ. 1
7. रामविलास शर्मा - युग प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद, पृ. 25-26
8. सं. चंदुलाल दुबे - 'भारतवाणी' मासिक पत्रिका, पृ. 20
9. सं. सत्येन्द्र कुमार तनेजा - नाटककार जयशंकर प्रसाद, पृ. 209
10. डॉ. रामप्रसाद मिश्र - प्रसाद : गद्यकार, पृ. 72
11. वही, पृ. 154
12. डॉ. हरिमोहन शर्मा - रचना से संवाद, पृ. 3